ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 जनवरी 2019
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११९
युगाब्द-५११९, अंक-१०९, वर्ष-१२
माघ, विक्रमी २०७५ (जनवरी 2019)

मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

त्वमसि प्रशस्यो विदथेषु सहन्त्य। अग्ने रथीरध्वराणाम् ॥ २६ ॥ –ऋ० ५। ८। ३५। २

व्याख्यान–हे (अग्ने) सर्वज्ञ! तू ही सर्वत्र (प्रशस्यः) स्तुति करने के योग्य है, अन्य कोई नहीं। (विदथेषु) यज्ञ और युद्धों में आप ही स्तोतव्य हो। जो तुम्हारी स्तुति को छोड़के अन्य जड़ादि की स्तुति करता है, उसके यज्ञ तथा युद्धों में विजय कभी सिद्ध नहीं होती है। (सहन्त्य) शत्रुओं के समूहों के आप ही घातक हो। (रथीरध्वराणाम्) अध्वरों अर्थात् यज्ञ और युद्धों में आप ही रथी हो। [आप ही] हमारे शत्रुओं के योद्धाओं को जीतनेवाले हो। इस कारण से हमारा पराजय कभी नहीं हो सकता ।।२६।।

सम्पादकीय

कथित आन्दोलनों से किधर जा रहा है हमारा समाज....

जब से सबरीमाला मंदिर में महिलाओं के प्रवेश संबंधी सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय आया है तब से इस विषय पर विवाद बढ़ता ही जा रहा है और अब तो स्थिति यह हो गई है कि इस विवाद ने हिंसा का स्वरूप ले लिया है। इस प्रकार की स्थिति समाज व राष्ट्र दोनों के लिए हितकर नहीं है। इस विवाद में अब सीधे-सीधे दो पक्ष बन गए हैं। एक पक्ष वह जो पहले स्थापित परंपरा को ही बनाए रखना चाहता है वहीं दूसरा पक्ष उसे बदल कर सभी महिलाओं के प्रवेश का पक्षधर है। क्या महिलाओं के उस मंदिर विशेष में प्रवेश मिलने और न मिलने से कोई अंतर पैदा होता है? क्या प्रवेश न मिलने से अब तक कोई बड़ी हानि महिलाओं की हो रही थी? क्या मंदिर में प्रवेश हो जाने से महिलाओं को कोई विशेष लाभ प्राप्त होना है? क्या जो महिलाएं और संगठन, मंदिर में महिलाओं के प्रवेश के लिए प्रयासरत हैं, उनका उस मंदिर, उनकी परंपराओं और इस प्रकार की कथाओं-कहानियों में कोई विश्वास या आस्था है? ऐसे ही कुछ प्रश्न हैं जिन पर विचार-विमर्श आवश्यक है। इसको ठीक से समझने और जानने के लिये प्रयास किया जाए।

अगर प्रश्नवार विचार किया जाए तो वहां प्रवेश के द्वारा एक मूर्ति के दर्शन मात्र से वहां की महिलाएं क्या किसी आध्यात्मिक या बौद्धिक उत्थान से वंचित हो रही थी? भीड़ भाड़ में, पंक्ति में लगकर, घंटों की प्रतीक्षा के बाद, एक बार, एक मूर्ति के दर्शन कर लेने मात्र से क्या आध्यात्मिक उत्थान प्राप्त होता है? यह मात्र एक कल्पना ही है अर्थात् अनेकों वर्षों से जो महिलाओं को वहां प्रवेश की अनुमति नहीं थी तो उसमें महिलाओं की कोई हानि नहीं हो रही थी और न ही महिलाओं की सामाजिक स्थिति उसके कारण से दयनीय थी, न ही महिलाओं के प्रवेश से वहां कोई किसी प्रकार की हानि होने की संभावना है। साथ ही यह भी निश्चित है कि यदि प्रवेश दे दिया जाता है तो उससे भी वहां पर महिलाओं की सामाजिक स्थिति में कोई परिवर्तन होने वाला नहीं है क्योंकि देश भर के मंदिरों में प्रवेश प्राप्त होने के पश्चात् भी महिलाओं को वह स्थान प्राप्त नहीं हो सका जो प्राप्त होना चाहिए। महिलाओं का विकास, सम्मान और उत्थान, कल्पना पर आधारित आस्थाओं के चक्कर काटने से नहीं अपितु सत्य सिद्धांतों को जानकर, आध्यात्मिक मार्ग को अपनाकर, ऋषियों द्वारा प्रतिपादित समानता के सिद्धांतों और परंपराओं को अपनाकर ही हो सकता है। इस प्रकार की काल्पनिक आस्थाओं पर आधारित परंपराओं के लिए संघर्ष करना तो मात्र वास्तविक विषयों से पलायन ही है। ऐसे मुद्दों को प्रायः लोग अपने स्वार्थ की पूर्ति मात्र के लिए उठाते हैं। इसी संदर्भ में, यदि अन्य प्रश्नों पर विचार किया जाए तो

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

क्या इस विषय को विवाद व न्यायालय के स्तर तक ले जाने वाले लोग और वे महिलाएं जो न्यायालय की शरण तक पहुंची हैं, क्या उनको इस प्रकार की आस्थाओं, मान्यताओं और परंपराओं में तनिक भी विश्वास है? क्या मंदिर में चोरी छुपे प्रवेश करने वाली वह महिलाएं, जो साम्यवाद की पोषक हैं, उन्हें अपनी सांस्कृतिक परंपराओं और मूल्यों के प्रति कोई श्रद्धा है? तो क्या ऐसे लोगों के द्वारा इस विषय को विवादित बनाना, सामाजिक व राष्ट्रीय हानि नहीं कहलाएगा, जो देश भर के हजारों मंदिरों का तो विरोध करते हैं पर जहां महिलाओं का समान प्रवेश नहीं है, ऐसे सबरीमाला में प्रवेश की लड़ाई लड़ रहे हैं? उनका उद्देश्य महिलाओं को अधिकार नहीं अपितु उन्हें अपनी राजनीति का मोहरा बनाना है।

दूसरी ओर कल्पना पर आधारित परंपराओं के बचाव के लिए ही संघर्ष करते रहने से न परंपराएं बचेंगी, न धर्म की स्थापना होगी और न ही महिलाओं का सम्मान व उत्थान होगा। अत: आवश्यकता इस बात की है कि परंपराओं का सत्य के अनुसार स्थापन हो, आस्थाओं की सत्यता की जांच हो और उन्हें सत्य पर स्थापित किया जाए। उन्हें वेद के सिद्धांतों की कसौटी पर कसा जाए और झूठे आडम्बरों को छोड़ा जाए, जड़ मूर्तियों के 'ब्रह्मचर्य के खंडित होने' जैसी मान्यताओं का कोई आधार नहीं है। ऐसी ऐसी कल्पनाओं में रहने का ही लाभ साम्यवादी लोग उठाते हैं और समाज में वही वैमनस्य फैलाते हैं तथा सत्य धर्म की स्थापना में भी बाधा उत्पन्न करते हैं। ऐसे लोगों से यदि धर्म को बचाना है तो उसे तर्क और बुद्धि की कसौटी पर खरा उतरना होगा। उसी से जन-जन का हित होगा और अपना यह राष्ट्र पुन: वेद आधारित सिद्धांतों को अपनाकर, अपने आर्य पूर्वजों की भांति राष्ट्र को सक्षम बनाने में सफल होगा।

एक और विषय संक्षिप्त सी चर्चा के बाद इसे समाप्त करते हैं और वह विषय है आरक्षण का। इस देश में 1947 के बाद से ही विभिन्न लोगों द्वारा समय-समय पर आरक्षण रूपी झुनझुना अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिये दिया जाता रहा है। 70 वर्षों की आरक्षण व्यवस्था के बाद भी आरक्षण अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाया है और उसके लाभ के बजाय हानियां अधिक दृष्टिगोचर होने लगी हैं। पहले अनुसूचित जाति व जनजाति को यह खिलौना दिया गया। फिर अन्य पिछड़ा वर्ग को यह पकड़ा दिया गया। अब उसी क्रम में अनारक्षित वर्ग को इससे लुभाया जा रहा है। हो सकता है कल को ऐसा भी किया जाए कि संपन्न वर्ग के लिए भी आरक्षण की अलग से व्यवस्था की जाए। कुछ प्रतिशत आरक्षण आयकर देने वालों को भी पकड़ा दिया जाए जिससे वे नाराज न हों। आरक्षण माध्यम रह गया है केवल राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति का। उसको सही ढंग से लाभकारी कैसे बनाया जाए, तर्कसंगत कैसे बनाया जाए, इस पर विचार नहीं किया जाता है। 'आरक्षण व्यवस्था हो' इसमें कोई हानि नहीं है लेकिन वह इस प्रकार हो कि जो शोषित हैं, गरीब हैं, दबे कुचले हैं, समाज में जिन्हें आरक्षण की आवश्यकता है, जो लोग अवसर की कमी के कारण अपनी क्षमता का प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं, वह सब आरक्षण के माध्यम से उस स्थिति से निकल सकें। समाज में जातिवाद दूर हो, न कि उससे योग्यता कुंठित हो अपितु योग्यता निखर कर सामने आए। इस प्रकार की आरक्षण व्यवस्था हो जो समाज के हर वर्ग के उत्थान में सहायक हो। कोई अपने को ठगा हुआ महसूस न करे। राष्ट्र उन्नति के पथ पर आगे बढ़े। ऐसी व्यवस्था हो जो जन-जन का कल्याण करें, योग्यता का सम्मान करें, वंचित शोषित आदि सभी लोगों को राष्ट्र के उत्थान में लगाए। ऐसी आरक्षण व्यवस्था होनी ही चाहिए। ऐसा नहीं कि आरक्षण केवल राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति का माध्यम बन जाए। जैसा की स्वतंत्रता के बाद से ही चल रहा है और दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है। अत: आर्यों/आर्याओं ! आप समाज में घटित हो रही घटनाओं को सही परिप्रेक्ष्य में समझें और समाज के निर्माण में आर्योचित सिद्धांतों के अनुरूप अपना योगदान दें ।

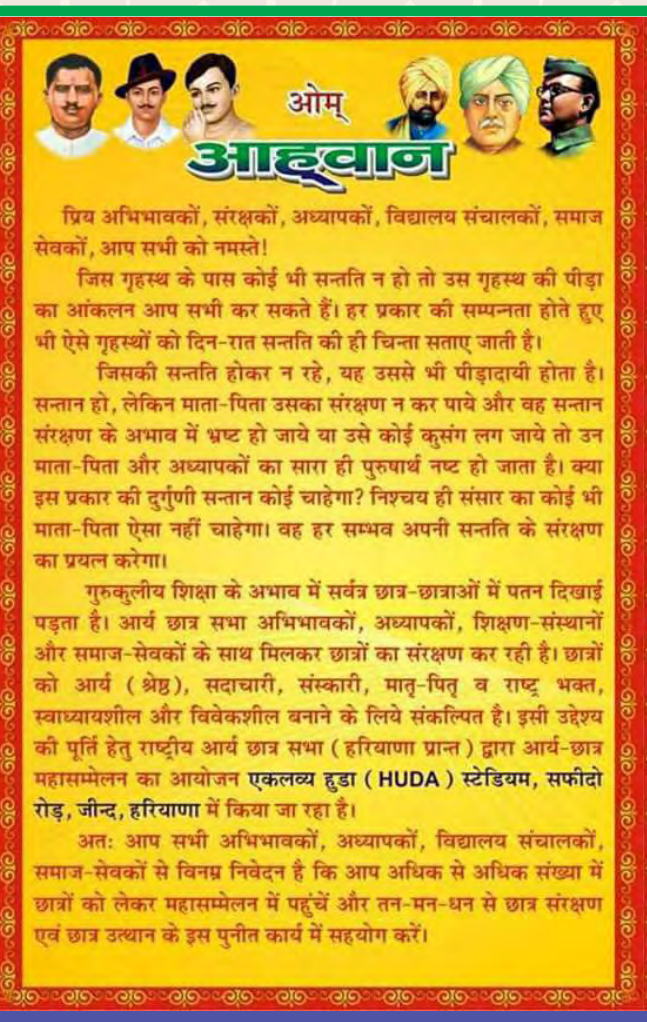

आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय, चित्तौड़ा झाल, दयानन्द ग्राम (नंगला कबीर), मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश में चल रहे प्रचारक कक्षा में 80 से अधिक आर्यों ने आर्य सिद्धान्तों को अवगाहन किया।

वैदिक संस्कारों का महत्त्व

-सोनू आर्य, हरसौला, कैथल

मनुष्य को स्वस्थ, बुद्धिमान, दीर्घायु एवं संस्कारवान बनाने हेतु गर्भाधान से अंत्येष्टि पर्यन्त सोलह संस्कारों का बहुत महत्व है। वर्तमान में संस्कारों की व्यवस्था लुप्तप्राय सी है, जिसके फलस्वरूप बालकों में अनेक विकृतियाँ देखी जा सकती हैं। बचपन-काल अपराध की और अग्रसर है। गुड़गांव के रेयान स्कूल में सीनियर द्वारा छोटे बच्चे की हत्या तथा यमुना नगर में छात्र द्वारा प्रिंसिपल की हत्या इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। इसके अलावा नित्य बलात्कार की दुखद घटनाएं घट रही हैं, जो किशोरों द्वारा ही अधिकतर अंजाम दी जाती हैं। जो 'आयु' भविष्य की आधार शिला तथा सुनहरे सपने संजोने की होती है उसमें इतने घोर अपराध दिन प्रतिदिन हो रहे हैं, आखिर कारण क्या है? कारण है- माता-पिता, मास्टर, स्कूल, समाज द्वारा बालकों के निर्माण में संस्कारों की अनदेखी। गर्भाधान संस्कार बिगाड़कर शारीरिक सुख भोग कि क्रिया बन गई है। रति क्रिया द्वारा शारीरिक वासना की आग में ही गर्भधारण किया-करवाया जा रहा है। माता पिता के कुत्सित-तामसिक विचार इसी समय बालकों में आरोपित होते हैं। नवजीवन की नींव ही गलत ढंग से रखी जाती है। इसी तरह से अन्य संस्कारों का भी रूप बिगड़ चुका है। जिन संस्कारों से उत्तम-उत्तम लाभ हो, उन्हीं को विकृत कर हम बड़ी-बड़ी हानियां उठा रहे हैं। अत: वर्तमान में स्वस्थ समाज निर्माण हेतु संस्कारों का सही विधि एवं काल को जानना अत्यावश्यक है ताकि वांछित लाभ प्राप्त हो सके।

गर्भाधान संस्कार

महर्षि दयानंद ने जो बात कही है कि गर्भधारण से पूर्व स्त्री पुरुष बलवान हों ताकि बालक भी बलवान हो। वही बात लंदन स्कूल ऑफ हाइजीन एण्ड ट्रापिकल मेडिसिन के शोधकर्ताओं द्वारा पश्चिमी अफ्रीका के ग्रामीण क्षेत्रों में 120 महिलाओं पर किए गए शोध में सामने आई है। अध्ययन के मुख्य लेखक प्रोफेसर एंड्रियु प्रेंटिस ने कहा- महिला आमतौर पर गर्भधारण करने के बाद खान-पान पर अधिक ध्यान देने लगती है लेकिन यह ध्यान गर्भधारण से पहले देना जरूरी है। शोधकर्त्ताओ ने पाया कि जिन महिलाओं ने अपने खान-पान पर ध्यान दिया था उनके बच्चों के जीन सक्रिय थे तथा जिन महिलाओं ने खान-पान पर ध्यान नहीं दिया उन महिलाओं के बच्चों के जीन कमजोर थे जिससे उन्हें खतरनाक बीमारी लगने का खतरा अधिक था। आयुर्वेद के अनुसार महर्षि दयानंद संस्कारविधि में कहते हैं कि शीघ्र विवाह करना चाहें तो कन्या 16 वर्ष की व पुरुष 25 वर्ष का अवश्य होना चाहिए अन्यथा इससे ज्यादा ही आयु हो।

इसी को विज्ञान भी कह रहा है। एक शोध में बताया गया है कि जो महिलाएं देर से मां बनती हैं उनकी बेटी की प्रजनन क्षमता प्रभावित होने का ज्यादा खतरा रहता है। शोध से पता चला है कि महिलाओं की प्रजनन क्षमता उम्र के साथ घटती चली जाती है। अत: सही विधि व आयु में ही गर्भधारण होना चाहिए ताकि सन्तान उत्तम गुण कर्म स्वभाव वाली बनें।

चूड़ाकर्म या मुण्डन संस्कार

बालक के जन्म के तीसरे वर्ष या एक वर्ष में उत्तरायण काल शुक्लपक्ष में जिस दिन आनन्द मंगल हो, उस दिन यह संस्कार करें। महर्षि दयानंद ने ऐसा संस्कारविधि में वैदिक ग्रंथोंनुसार वर्णन किया है। यहां उत्तरायणकाल का विधान इस कारण है क्योंकि सूर्य उत्तरायण होने से भारत में गर्मी बढ़ना शुरू हो जाती हैं, ताकि गर्मी में पसीने आदि से दुर्गन्ध आदि न बढ़े इस कारण उत्तरायणकाल में मुण्डन विधान है।

मुण्डन के पश्चात् इसी से जुड़ी वैदिक परम्परा शिखा का वर्णन करते हैं। हमारे सभी महापुरुष वैदिककाल में तथा विशेषकर गुरुकुलों के ब्रह्मचारी शिखा रखते थे। अनेक लोग आज भी रखते हैं। योगिराज श्री कृष्ण जी तो एक बार स्वयं यशोदा माता से पूछते हैं कि मैया कजहुं बढेगी चोटि अर्थात् मेरी चोटी कब बढ़ेगी। लेकिन शिखा केवल धार्मिक चिन्ह न होकर वैज्ञानिक लाभ भी देती है। योगशास्त्र के सिद्धांतानुसार सिर पर ब्रह्मरन्ध है। अध्यात्म में इसका विशिष्ट महत्व है। इसकी रक्षा हेतु नवजात गौखुर के बराबर शिखा रखना अति आवश्यक है। जैसे छप्पर या वृक्ष की छाया हमें गर्मी सर्दी से बचाती हैं, उसी तरह बालों में बाहरी प्रभाव को रोकने की शक्ति है। उन्हें ऊनी कंबल में लपेट देने से बर्फ बहुत कम गलती है बाहर की गर्मी बर्फ तक जाने से यह कंबल रोकता है। इसी प्रकार शिखा स्थान पर बाल रहने से बाहरी अनावश्यक गर्मी सर्दी का प्रभाव नहीं होता और उसकी सुरक्षा होती है। चोटी स्थान कई शारीरिक अंगों का संचालन व नियंत्रक स्थान भी है। शिखा का हल्का दबाव होने से रक्त प्रवाह ठीक रहने से मस्तिष्क ठीक प्रकार से कार्य करता है। इससे नेत्र ज्योति बढ़ती है तथा मनुष्य स्वस्थ तेजस्वी और दीर्घायु बनता है।

एक पाश्चात्य वैज्ञानिक सर चार्ल्स व्युक ने शिखा पर शोध कर बताया कि शिखा का शरीर के कुछ जरूरी अंगों से बहुत संबंध है। जिससे ज्ञान, बुद्धि और तमाम अंगों का संचालन होता है। जब से मैंने इस विज्ञान की खोज की तबसे चोटी रखता हूँ। चोटी से उपरोक्त लाभ निश्चित ही प्रतीत होते हैं किंतु अभी और अनुसन्धान इस पर किया जाना अपेक्षित है।

यज्ञोपवीत संस्कार

वेदारम्भ के साथ ही या कुछ दिन पूर्व यह संस्कार करवाया जाता है। शिखा की तरह इसमें बालकों को जनेऊ/यज्ञोपवीत धारण करवाया जाता था। हमारे सब पूर्वज इसे धारण करते थे। महावीर हनुमान जी के विषय में विख्यात है कि 'कान्धे मूंज जनेऊ साजे' अर्थात् हनुमान जी कांधे पर मूंज का जनेऊ धारण किए रहते थे। दूसरी सांस्कृतिक चिन्ह होने से संस्कृति की रक्षा होती है। यज्ञोपवीत के तीन सूत्रों से तीन ऋणों का बोध होता है। ब्रह्मचर्य से ऋषि ऋण का, यज्ञ से देव ऋण और प्रजापालन से पितृ ऋण चुकाया जाता है। इसके अतिरिक्त बहुत से विशेषज्ञ मानते हैं कि शारीरिक शुद्धि एवं ब्रह्मचर्य रक्षा आदि में बहुत लाभ प्रदान करता है। किन्तु इस पर भी व्यवस्थित अनुसंधान अभी अपेक्षित है, जिसका श्री गणेश आर्य समाज द्वारा किया जाए तो और बेहतर है।

वेदारम्भ संस्कार

वेदारम्भ संस्कार उसे कहते हैं जो गायत्रीमन्त्र से लेकर सांगोपांग

-शेष अगले पृष्ठ पर ...

सोलह संस्कार का शेष...

चारवेदों के अध्ययन करने के लिए नियम धारण करना होता है। गुरुकुल में प्रवेश के समय आचार्य बालकों को मेखला, दो शुद्ध कोपीन, दो अंगोच्छे, एक उत्तरीय और दो कटिवस्त्र प्रदान करता था। इनमें से मेखला जिसको तगड़ी भी कहते हैं, के वैज्ञानिक लाभ के नियम में स्वामी ओमानंद सरस्वती जी ब्रह्मचर्य के साधन पुस्तक में विस्तार से लिखते हैं। यह मेखला मून्ज वा दर्भ धनु संज्ञक तृण वा बल्कल अथवा उन की होती थी। बहुत सी महिलाएं वर्तमान में भी चांदी की मेखला आभूषण के तौर पर पहनती है। स्वामी ओमानंद जी लिखते हैं कि मेखला की गांठ पीठ पर मेरुदंड के ऊपर रहती है। जो सीधा सोने में बाधा डालती है, चुभती है और सामान्यवस्था में तो ब्रह्मचारी को सीधा नहीं सोने देती। इसी कारण एक करवट सोने का स्वभाव बन जाता है। प्राचीन काल से मेखला तगड़ी ब्रह्मचर्य पालन के लिए दीक्षा के रूप में एक चिन्ह के रूप में गुरुओं के द्वारा परिपाटी चली आती थी जो महाभारत के बाद लुप्त प्राय सी हो गई, किंतु मेखला धारण करवाने का दायित्व गुरु के स्थान पर माताओं ने ले लिया।

वर्तमान में वह भी छूटता सा प्रतीत हो रहा है। परमात्मा सद्बुद्धि दे कि यह मेखला, शिखा और कोपीन जो वेद की आज्ञा अनुसार परोपकारी ऋषि महर्षियों ने हमारे कल्याणार्थ प्रचलित किए हैं, शिक्षित युवक वर्ग श्रृद्धापूर्वक अपनाए जिससे हम इस ऋषि ऋण से उऋण हो जाएं।

संस्कृत ही क्यों?

–आचार्य वेदप्रकाश

पूरी दुनिया में 6500 से भी अधिक भाषाएं बोली जाती हैं। इन भाषाओं में 2000 तो ऐसी भाषाएं हैं जिनके बोलने वालों की संख्या 1000 से भी कम है। इन भाषाओं में अकेले चीन में बोली जाने वाली भाषा मेंडारिन ऐसी है, जिसके जानने और बोलने वाले 100 करोड़ से भी ज्यादा हैं, किन्तु आपको जानकर आश्चर्य होगा कि दुनिया में प्रचलन में चाहे जितनी भाषाएं हों, पर उनमें एक ही भाषा ऐसी है जो **प्रचीनतम** भी है और **शुद्धतम** भी है। प्रचीनतम इसलिए कि ज्ञात इतिहास की सबसे पुरानी भाषा है और वर्तमान में अस्तित्व में भी है। वह निर्विवाद रूप से संस्कृत है और शुद्धतम इसलिए कि यदि व्याकरण के दृष्टिकोण से देखें तो इस भाषा में अपवाद कुछ भी नहीं है। इस भाषा के जितने भी नियम हैं उन्हें महर्षि पतंजलि ने महज 4000 सूत्रों में आबद्ध कर दिया है और उपलब्ध संस्कृत साहित्य (वैदिक वाङ्मय को छोड़कर) चाहे जितना पुराना हो अथवा जितना नया हो, सब का सब महर्षि पाणीनि के अष्टाध्यायी के सूत्रों से समझा जा सकता है। किन्तु दुनिया की अन्य भाषाओं में तमाम अपवाद हैं। अपवादों के कारण उन भाषाओं को पढ़ना, उनको सीखना बड़ा दुष्कर होता है। उदाहरण के तौर पर इंग्लिश भाषा को देखें। 'I' के साथ कब shall लगता है और कब will लगता है यह बात कोई अंग्रेजी का कुशल ज्ञाता भी निश्चित तौर पर नहीं बता सकता। ऐसे तमाम अपवादों के कारण इंग्लिश भाषा को सीखना तो दूर, पढ़ने में भी वर्षों लग जाते हैं। हिन्दी का उदाहरण ले लें, 'से' का प्रयोग कहां करना है यह असमंजस बना रहता है। पेड़ से पत्ता गिरा, चम्मच से खाना खाया दोनों ही अर्थों में (अपादान अलग होने के अर्थ में, अधिकरण के अर्थ में) दोनों में ही 'से' का प्रयोग किया। पहली बार हिन्दी सीखने वाले के लिये यह बड़ा उलझन का विषय है। किन्तु संस्कृत का नियम स्पष्ट और निश्चित है। अष्टाध्यायी को ठीक-ठीक पढने वाला चाहे व दुनिया के किसी भी भाग का रहने वाला हो, इसकी वैज्ञानिकता, इसकी संक्षिप्तता और इसकी सहजता को देखकर दंग रह जाता है। संस्कृत का जितना भी आर्ष साहित्य उपलब्ध है वह सभी तमाम विशेषताओं से पूर्ण है। सभी आर्ष साहित्य दो शैलियों में उपलब्ध है– या तो वे सूत्रबद्ध हैं या छन्दबद्ध हैं। सूत्रबद्धता अर्थात् सूत्र-शैली की विशेषता होती है कि उसमें न्यूनतम अर्थात् कम से कम अक्षरों का प्रयोग करके अधिक से अधिक जानकारियां व्यवस्थित करते हैं। जैसे हमारे सभी दर्शन शास्त्र, हमारा व्याकरण और अर्थशास्त्र के तमाम ग्रन्थ सूत्र शैली में ही उपलब्ध हैं। योगशास्त्र पर दुनिया में लाखों पृष्ठों में हजारों पुस्तकें लिखी गयी हैं किन्तु योग की प्रामाणिक आर्ष पुस्तक में केवल 195 सूत्र हैं। ये सूत्र एक वाक्य से भी छोटे होते हैं अर्थात् पूरा योग शास्त्र किसी अखबार के आधे पृष्ठ के एक कॉलम में आने वाले अक्षरों की संख्या से भी कम में समाहित हो जाता हैं। इतना छोटा है हमारे महर्षि पतंजलि का योग शास्त्र। किन्तु विषय तो आप समझ ही रहें हैं कि यह योग शास्त्र विद्या का कितना बड़ा भण्डार है। अंग्रेजी भाषा का व्याकरण हजारों पृष्ठों में उपलब्ध है और तब भी वह सम्पूर्ण नहीं है। प्रतिवर्ष नये नये परिवर्तन होते रहे हैं। शेक्सपियर के नावेल आजकल उसी रूप में नहीं पढ़े जा सकते। किन्तु हमारी संस्कृत भाषा का व्याकरण सूत्र शैली में है जो अखबार के एक पृष्ठ में आने वाले अक्षरों से भी कम है। इस कारण लाखों वर्ष पूर्व का रामायण भी बड़ी सहजता से आज भी पढ़ा जा सकता है।

दूसरी शैली छन्दबद्धता है जैसे रामायण, महाभारत, मनुस्मृति आदि। वर्तमान में महाभारत के एक लाख से भी ज्यादा श्लोक, रामायण के 25000 से अधिक श्लोक, ये सब के सब छन्दबद्ध हैं अर्थात् इनको गाया जाता है। गाया जा सकने की वजह से याद करना इतना सरल होता है कि कुछ लोगों को गीता के सभी 700 श्लोक सहजता से कण्ठस्थ हो जाते हैं। इस नाते हमारे शास्त्र पीढ़ी दर पीढ़ी अनवरत रूप से हजारों वर्षों से सुरक्षित रूप से चले आ रहे हैं।

क्रमशः ..... (शेष अगले अंक में)

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	05 जनवरी	दिन-शनिवार	मास-पौष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-मूल
पूर्णिमा	21 जनवरी	दिन-सोमवार	मास-पौष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-पुष्य
अमावस्या	04 फरवरी	दिन-सोमवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-श्रवण
पूर्णिमा	19 फरवरी	दिन-मंगलवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-आश्लेषा

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय प्रारंभ करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

प्रश्न-आचार्य के साथ विद्यार्थी कैसा-कैसा वर्ताव करें और कैसा-कैसा न करें ?

उत्तर-मिथ्या को छोड़के सत्य बोले, सरल रहे, अभिमान न करे। आज्ञा पालन करे, स्तुति करे, निन्दा न करे। नीचे आसन पर बैठे, ऊँचे पर न बैठे। शान्त रहे, चपलता न करे। आचार्य की ताड़ना पर प्रसन्न रहे, क्रोध कभी न करे। जब कुछ वे पूछें तब हाथ जोड़के नम्र होकर उत्तर देवें, घमण्ड से न बोले। जब वे शिक्षा करें, चित्त देकर सुने, ठट्ठे में न उड़ावें। शरीर और वस्त्र शुद्ध रक्खे, मैले कभी न रक्खे। जो कुछ प्रतिज्ञा करे उसको पूरी करे। जितेन्द्रिय होवे, लम्पटपन, व्यभिचार कभी न करें,

उत्तमों का सदा मान करे, अपमान कभी न करें। उपकार मानके कृतज्ञ होवे। किसी का अनुपकारी होकर कृतघ्न न होवे। पुरुषार्थी रहे, आलसी कभी न हो। जिस-जिस कर्म से विद्याप्राप्ति हो उस-उस को करते जायं, जो-जो बुरे काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक आदि विद्याविरोधी हों उनको छोड़कर उत्तम गुणों की कामना करे। बुरे कामों पर क्रोध, विद्याग्रहण में लोभ, सज्जनों में मोह, बुरे कार्मों से भय, अच्छे काम न होने में शोक करके विद्यादि शुभगुणों से आत्मा और वीर्य आदि धातुओं की रक्षा से जितेन्द्रिय हो शरीर का बल सदा बढ़ते जायें।

प्रश्न-आचार्य विद्यार्थियों के साथ कैसे वर्तें ?

उत्तर-जिस प्रकार से विद्यार्थी विद्वान्, सुशील, निरभिमानी, सत्यवादी, धर्मात्मा, आस्तिक, निरालस्य, उद्योगी, परोपकारी, वीर, धीर, गम्भीर, पवित्राचरण, शान्तियुक्त, दमनशील, जितेन्द्रिय, ऋजु, प्रसन्नवदन होकर माता-पिता, आचार्य, अतिथि, बन्धु, मित्र, राजा, प्रजा आदि के प्रियकारी हों। जब किसी से बातचीत करें, तब जो-जो उसके मुख से अक्षर, पद, वाक्य निकलें, उनको शान्त होकर सुनके प्रत्युत्तर देवें। जब कभी कोई बुरी चेष्टा, मलिनता, मैले वस्त्रधारण, बैठने-उठने में विपरीताचरण, निन्दा, ईर्ष्या, द्रोह, विवाद, लड़ाई, बखेड़ा, चुगली, किसी पर मिथ्या दोष लगाना, चोरी-जारी, अनभ्यास, आलस्य, अतिनिद्रा, अतिभोजन, अतिजागरण, व्यर्थ खेलना, इधर-उधर अट्ट-सट्ट मारना, विषयसेवन, बुरे व्यवहारों की कथा करना वा सुनना, दुष्टों के संग बैठना आदि दुष्ट व्यवहार करें, तो उनको यथापराध कठिन दण्ड देवें। इसमें प्रमाण -

सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः ।
लालनाश्रयिणो दोषास्ताडनाश्रयिणो गुणाः॥ १॥

- महाभाष्य अ०८। पा० १। सू० ८

आचार्य लोग अपने विद्यार्थियों को विद्या ओर सुशिक्षा होने के लिए प्रेमभाव से अपने हाथों से ताड़ना करते हैं। क्योंकि सन्तान और विद्यार्थियों का जितना लालन करना है, उतना ही उनके लिए बिगाड़, और जितनी ताड़ना करनी है उतना ही उनके लिए सुधार है। परन्तु ऐसी ताड़ना न करे कि जिससे अंगभंग वा मर्म में लगने से विद्यार्थी वा लड़के-लड़की लोग व्यथा को प्राप्त हो जाएँ।

प्रश्न-पठितव्यं तदपि मर्त्तव्यं न पठितव्यं तदपि मर्त्तव्यं दन्तकटाकटेति किं कर्त्तव्यम् ?

हुड़दङ्गोवाच-हुड़दंगा कहता है कि जो पढ़ता है वह भी मरता है, और जो नहीं पढ़ता वह भी मरता है फिर पढ़ने-पढ़ाने में दाँत कटाकट क्यों करना ?

उत्तर- न विद्यया विना सौख्यं नराणां जायते ध्रुवम्।
अतो धर्मार्थमोक्षेभ्यो विद्याभ्यासं समाचरेत्॥

सज्जन उवाच-सज्जन कहता है कि सुन भाई हुड़दंगे! जो तू जानता है, सो विद्या का फल नहीं कि विद्या के पढ़ने से जन्म-मरण, आँख से देखना, कान से सुनना आदि ये ईश्वरीय नियम अन्यथा हो जाएँ। किन्तु विद्या से यथार्थज्ञान होकर यथायोग्य व्यवहार करने-कराने से आप और दूसरों को आनन्दयुक्त करना विद्या का फल है। क्योंकि बिना विद्या के किसी मनुष्य को निश्चल सुख नहीं हो सकता। क्या भया किसी को क्षणभर सुख हुआ, न हुआ-सा है। किसी का सामर्थ्य नहीं है कि जो अविद्वान् होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के स्वरूप को यथावत् जानकर सिद्ध कर सके। इसलिए सबको उचित है कि इनकी सिद्धि के लिए विद्या का अभ्यास तन, मन, धन से किया और कराया करें।

(हुड़दङ्ग)-हम देखते हैं कि बहुत-से मनुष्य विद्या पढ़े हुए दरिद्र और भीख माँगते तथा बिना पढ़े हुए राज्य धन का आनन्द भोगते हैं।

(सज्जन)-सुनो प्रिय! सुख-दुःख का योग आत्मा में हुआ करता है। जहाँ विद्यारूप सूर्य का अभाव और अविद्यान्धकार का भाव है वहाँ दुःखों की तो भरमार, सुख की क्या ही कथा कहना है? और जहाँ विद्यार्क प्रकाशित होकर अविद्यान्धकार को नष्ट कर देता है, उस आत्मा में सदा आनन्द का योग और दुःख को ठिकाना भी नहीं मिलता है। हुड़दंगा शिर धुनकर चुप हो गया।

प्रश्न-आचार्य किस रीति से विद्या और सुशिक्षा का ग्रहण करावें, और विद्यार्थी लोग करें?

उत्तर-आचार्य समाहित होकर ऐसी रीति से विद्या और सुशिक्षा करें कि जिससे उस के आत्मा के भीतर सुनिश्चित अर्थ होकर उत्साह ही बढ़ता जाये। ऐसी चेष्टा वा कर्म कभी न करें कि जिसको देख वा करके विद्यार्थी अधर्मयुक्त हो जावें। दृष्टान्त, हस्तक्रिया, यन्त्र, कलाकौशल, विचार आदि से विद्यार्थियों के आत्मा में पदार्थ इस प्रकार साक्षात् करावें कि एक के जानने से हजारों पदार्थ यथावत् जानते जाएँ।

अपने आत्मा में इस बात का ध्यान रखें कि जिस-जिस प्रकार से संसार में विद्या, धर्माचरण की बढ़ती और मेरे पढ़ाये मनुष्य अविद्वान् और कुशिक्षित होकर मेरी निन्दा का कारण न हो जाएँ, कि मैं ही विद्या के रोकने और अविद्या की वृद्धि का निमित्त गिना जाऊँ। ऐसा न हो कि सर्वात्मा परमेश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव से मेरे गुण-कर्म-स्वभाव विरुद्ध होने से मुझको महादुःख भोगना पड़े। धन्य वे मनुष्य हैं कि जो अपने आत्मा के समान सुख में सुख और दुःख में दुःख अन्य मनुष्यों का जानकर धार्मिकता को कदापि नहीं छोड़ते। इत्यादि उत्तम व्यवहार आचार्य लोग नित्य करते जाएँ।

विद्यार्थी लोग भी जिन कर्मों से आचार्य की प्रसन्नता होती जाए, वैसे कर्म करें। जिससे उसका आत्मा सन्तुष्ट होकर चाहे कि ये लोग विद्या से युक्त होकर सदा प्रसन्न रहें। रात-दिन विद्या ही के विचार में लगकर एक-दूसरे के साथ प्रेम से परस्पर विद्या को पढ़ाते-पढ़ाते जावें। जहाँ विषय वा अधर्म की चर्चा भी होती हो वहाँ कभी खड़े भी न रहें। जहाँ-जहाँ विद्यादि व्यवहार और धर्म का व्याख्यान होता हो, वहाँ से अलग कभी न रहें।

-क्रमशः ....

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट–

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक

www.aryanirmatrisabha.com/if=kdk पर जाएं।

23 दिसम्बर 2018–21 जनवरी–2019 **पौष** ऋतु– शिशिर

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
पुष्य शुक्ल पूर्णिमा/प्रतिपदा 21 जनवरी				स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 23 दिसम्बर		आर्द्रा कृष्ण प्रतिपदा 23 दिसम्बर
पुनर्वसु कृष्ण द्वितीया 24 दिसम्बर	पुष्य कृष्ण तृतीया 25 दिसम्बर	आश्लेषा कृष्ण चतुर्थी 26 दिसम्बर	मघा कृष्ण पंचमी/षष्ठी 27 दिसम्बर	पू० फाल्गुनी कृष्ण सप्तमी 28 दिसम्बर	उ० फाल्गुनी कृष्ण अष्टमी 29 दिसम्बर	हस्त कृष्ण नवमी 30 दिसम्बर
चित्रा कृष्ण दशमी 31 दिसम्बर	स्वाती कृष्ण एकादशी 1 जनवरी	विशाखा कृष्ण द्वादशी 2 जनवरी	अनुराधा कृष्ण त्रयोदशी 3 जनवरी	ज्येष्ठा कृष्ण चतुर्दशी 4 जनवरी	मूल कृष्ण अमावस्या 5 जनवरी	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल प्रतिपदा 6 जनवरी
उत्तराषाढ़ा शुक्ल प्रतिपदा 7 जनवरी	श्रवण शुक्ल द्वितीया 8 जनवरी	धनिष्ठा शुक्ल तृतीया 9 दिसम्बर	शतभिषा शुक्ल चतुर्थी 10 जनवरी	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल पंचमी 11 जनवरी	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल षष्ठी 12 जनवरी	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल सप्तमी 13 जनवरी
रेवती शुक्ल अष्टमी 14 जनवरी	अश्विनी शुक्ल नवमी 15 जनवरी	भरणी शुक्ल दशमी 16 जनवरी	कृतिका शुक्ल एकादशी 17 जनवरी	रोहिणी शुक्ल द्वादशी 18 जनवरी	मृगशिरा शुक्ल त्रयोदशी 19 जनवरी	आर्द्रा शुक्ल चतुर्दशी 20 जनवरी

22 जनवरी–19 फरवरी–2019 **माघ** ऋतु– शिशिर

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
	आश्लेषा कृष्ण द्वितीया 22 जनवरी	मघा कृष्ण तृतीया 23 जनवरी	पू० फाल्गुनी कृष्ण चतुर्थी 24 जनवरी	उ० फाल्गुनी कृष्ण पंचमी 25 जनवरी	हस्त कृष्ण षष्ठी 26 जनवरी	चित्रा कृष्ण सप्तमी 27 जनवरी
स्वाती कृष्ण अष्टमी 28 जनवरी	विशाखा कृष्ण नवमी 29 जनवरी	अनुराधा कृष्ण दशमी 30 जनवरी	ज्येष्ठा कृष्ण एकादशी 31 जनवरी	मूल कृष्ण द्वादशी 1 फरवरी	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण त्रयोदशी 2 फरवरी	उत्तराषाढ़ा कृष्ण चतुर्दशी 3 फरवरी
श्रवण कृष्ण अमावस्या 4 फरवरी	धनिष्ठा शुक्ल प्रतिपदा 5 फरवरी	धनिष्ठा शुक्ल द्वितीया 6 फरवरी	शतभिषा शुक्ल द्वितीया 7 फरवरी	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल तृतीया 8 फरवरी	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल चतुर्थी 9 फरवरी	रेवती शुक्ल पंचमी 10 फरवरी
अश्विनी कृष्ण षष्ठी 11 फरवरी	भरणी शुक्ल सप्तमी 12 फरवरी	कृतिका शुक्ल अष्टमी 13 फरवरी	रोहिणी शुक्ल नवमी 14 फरवरी	मृगशिरा शुक्ल दशमी 15 फरवरी	आर्द्रा शुक्ल एकादशी 16 फरवरी	पुनर्वसु शुक्ल द्वादशी/त्रयोदशी 17 फरवरी
पुष्य शुक्ल चतुर्दशी 18 फरवरी	आश्लेषा शुक्ल पूर्णिमा 19 फरवरी				सुभाष जयन्ती 23 जनवरी	

Rishi Dayanand - His Life And Work -Saroj Arya, Delhi

Swamiji's reply was characteristic of him. "Shall untruth be the basis of Arya Samaj? This cannot be." This reply so much irritated Raj Krishna, that he gave up all connection with Swamiji, and stared dissuading people from joining the Arya Samaj, thought that without his co-operation the scheme would die out. But heeding neither opposition nor public censure Swamiji held a public meeting on 10th April, 1875, under the presidency of Mr. Girdhari Lal Dayal Dass Kothari, B.A., LL.B., in the garden of Dr. Manak ji The Arya Samaj was duly established, and the following principles accepted:-

1. The establishment of Arya Samaj is essential in the interest of society.

2. The Arya Samaj shall regard the Vedas as absolute authoritative. For purposes of testimony, for the understanding of the Vedas and ascertaining the history of ancient Aryans all the four Brahmanas, Shatapatha, etc., the Vedangas, the four Upavedas, the six darshanas, and 1,127 Shakhas or expositions of the Vedas, shall, by virtue of their being ancient and recognised works of Rishis, be also regarded as secondarily authoritative, in so far only as their teaching is in accord with that of the Vedas.

3. There shall be a principal Arya Samaj in each province and the other Aray Samajas Shall be its branches, all connected with one another.

4. The Branch Samajas shall conform to and follow as model the principal Samaj.

5. The principal Samaj shall possess various Vedic works in Sanskrit and Aryabhasha (Hindi) for the dissemination of true knowledge, and it shall issue a weekly paper under the name of 'Araya Prakasha,' also an exponent of the Vedic teaching. The papers and the books shall be patronised by all the Samajas.

6. Every Samaj shall have a President and secretary. Other men and women shall be member thereof.

7. The President shall be responsible for the maintenance of the integrity and for the promotion of well being of the Samaj, while the Secretary shall reply to all letters and shall keep a record of the member of the Samaj.

8. The members of the Samaj shall be truthful, straightforward, pure and philanthropic.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

I am a Swayamsevak of RSS from childhood. As a Swayamsevak my main objectives was man-making & patriotism. But I Have no ideas on my religious texts & Vedas. So, after spending two days in Arya Nirmatri Sabha, I have find a glorious views from our Ancestral Texts Vedas & "Krinvanto Vishwanmaryam". Jai Arya Jai Aryavart.

Name: Suman Malakar, Age: 26 year, Quli.: B.Ed, Add.: Nadia zilla, West Bengal.

जब से हम आर्यसमाज से जुडें है तो हमें यह जानकारी मिला है कि पहले हम बहुत बड़े मूर्ख थे। जैसे कि आपस में लड़ना, मूर्ति पूजा करना, मांस-मछली इत्यादि का प्रयोग करना। लेकिन जब से हम आर्यसमाज से जुड़े तब से हम इन सब का त्याग करते हैं क्योंकि यह सब मूर्ति-पूजन पूरी तरह से अन्धविश्वास हैं। मांस-मछली का प्रयोग करने से हमारा आचरण सिर्फ नष्ट होता हैं। आज से हम एक आर्य है। जिसका मूल उद्देश्य यह सब आडम्बर, अन्धविश्वास आदि को दूर करना है। और अपने राष्ट्र कर रक्षा करना हमारा परम-कर्तव्य है।

नाम: प्रकाश शर्मा, आयु: 24 वर्ष, योग्यता: बी.कॉम, पता: धोबानी लेन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।

मैंने आर्य समाज के शिविर में पहली बार भाग लिया है और मुझे प्रथम बार में ही बहुत सारे प्रश्नों का उत्तर मिला। जैसे कौन हैं? कैसे? कहाँ रहते हैं? इत्यादि। यहाँ आने से पहले मैं मूर्ति-पूजन पर विश्वास करता था। और बहुत बड़े अन्धकार में जीते थे। यहाँ उपस्थित आचार्य जी ने हमें वेद के बारे में बताया और दैनिक जीवन में वेद का क्या महत्त्व है वो समझाया। बाहर के देशों ने कितनी बार यहाँ अक्रमण किया और आर्यावर्त को खण्ड़-विखण्डन कर दिया, साथ ही हमारी प्राचीन और श्रेष्ठ ग्रन्थों को विनाश करने के लिये अनेकों बार प्रयास किया। भाग्यवश हम कुछ ही आर्य शेष रह गए हैं। हमें आर्यावर्त, समाज और देश निर्माण के लिए आगे आना होगा। साथ ही साथ हमारे कितने देवी-देवता हैं और किसी शब्द के अर्थ को इधर-उधर प्रयोग कर कैसे आर्य और आर्यसमाज को बदनाम कर रहें हैं। आशा है और ईश्वर से प्रर्थना करता हूं और संकल्प लेता हूं कि मैं आर्यावर्त प्रांत बनाने में भागीदार बनूगां।

मेरा सहयोग- मैं जितना सक्ष्म रहूंगा, उतना करूगां।

नाम: राहुल नायक, आयु: २५ वर्ष, योग्यता: बारवीं, कार्य: छात्र, पता: होटवार फार्म, रांची, झारखण्ड़।

बहुत ही प्ररेणदायक सब कुछ सत्य का ज्ञान प्राप्त हुआ। देश की वर्तमान दशा का अवलोकन हुआ, ऐसे सब बार-बार होने चाहिए ताकि आज के युवा को भी देश की रक्षा मे सहयोग दे। तथा विद्या की प्राप्ति ही तथा समाज में फैला अंधकार दूर हा तथा युवा जागरूक हो।

नाम: मनीष अरोरा, आयु: ४० वर्ष, योग्यता: स्नातक, कार्य: सेल्स मैनेजर, पता: हस्तिनापरु, मेरठ, उत्तर प्रदेश।

बहुत अच्छा रहा ऐसा लग रहा है जैसे- आज मेरा नया जन्म हुआ है और आज से ही एक सच्चा देश सेवा करना सीखा है। आज मुझे मेरे जीवन का सिद्धान्त मिल गया। आज मैं अपने आप को बहुत भाग्यशाली महसूस कर रहा हूं। मेरे प्रेरक को मैं बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं क्योंकि उन्होंने ही मुझे हमारे पूर्वजों की गलती को दोहराने से बचाया। धन्यवाद! जय आर्य समाज, जय आर्य जय आर्यावर्त।

मैं अपना जीवन से तन-मन-धन से सहयोग करना चाहता हूं। आज से मैं आर्य हूं और मेरा जीवन आर्यावर्त के लिए है।

नाम: आर्य विनोद कुमार, आयु: २० वर्ष, योग्यता: स्नातक, पता: जमुई, बिहार।

सत्र से हमें भगवान का पता चला है कि वह एक है वह सर्वशक्तिमान है। उसका कोई रूप नहीं है। मूर्ति पूजा नहीं करनी चाहिए। यदि हम कोई भी कार्य करते हैं तो वह बुद्धि से सोच-समझ कर करना चाहिए। मनुष्य बुद्धि से सही समझ सकता है और हमें किसी पाखण्ड को नहीं मानना चाहिए, यह अंधविश्वास के कारण होता है। हमें पढ़ना-लिखना चाहिए। सभी को पढ़ने के लिये प्रेरित करना चाहिए और हमें अपने देश की रक्षा करनी चाहिए। जाति के नाम पर नहीं लड़ना चाहिए। हमें अपने देश में एकता बनाई रखनी चाहिए। नशे से दूर रहना चाहिए। मैं भारत देश के अन्दर सभी लोगों को आर्य बनाऊगां।

नाम: सुरेन्द्र, आयु: २९ वर्ष, योग्यता: बारहवीं, पता: कैथल, हरियाणा।

संध्या काल

पौष- मास, शिशिर ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(23 दिसम्बर 2018 से 21 जनवरी 2019)
प्रातः कालः 7 बजकर 00 मिनट से **(7.00 A.M.)**
सायं कालः 5 बजकर 45 मिनट से **(5.45 P.M.)**

माघ- मास, हेमन्त ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(22 जनवरी 2018 से 19 फरवरी 2019)
प्रातः कालः 6 बजकर 45 मिनट से **(6.45 A.M.)**
सायं कालः 6 बजकर 00 मिनट से **(6.00 P.M.)**

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्रि सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।